 Lecture No — ①

Name of the College — APSM College, Barauni, Begusarai
Name — Bharti Kumari (GT)
Deptt. — A.I.H.&C
Lesson Plan For Class — BA. A.I.H.&C H-I, paper-II
Date — 24-04-2021
Name of the topic — Gupt period (Social Development in Gupt period) 275-300 ई.

गुप्तकाल में सामाजिक विकास

Introduction

गुप्त काल के शासक महान योद्धा थे, साथ-साथ साहित्यिक विचारधाराओं के साथ-साथ धार्मिक और परोपकारी भी थे। गुप्त काल की शासन-व्यवस्था राजतंत्रात्मक थी। राजाओं के दैवीय अधिकार सिद्धान्त लोकप्रिय था। जनता सम्राट को शिव का प्रतिनिधि एवं न्याय की मूर्ति समझती थी। शासन केन्द्र-बिन्दु सम्राट होता था; मंत्रियों तथा उच्च अधिकारियों की नियुक्ति वही करता था, किन्तु सम्राट मनमानी नहीं करते थे। अधिकारियों की नियुक्ति में मंत्रियों व अधिकारियों की सम्मति लेती थी तथा शास्त्रों द्वारा निर्धारित नियमों के अनुरूप शासन करते थे। सम्राट मंत्रियों की सलाह मानते थे, किन्तु उनकी बात मानना सम्राट के लिए अनिवार्य नहीं था। गुप्त साम्राज्य बहुत विस्तृत था, अतः प्रशासनिक की दृष्टि से साम्राज्य को कई भागों में बाँटा गया था। प्रान्तों को 'देश' या भुक्ति कहा जाता था। शासन की दृष्टि से सामाजिक जीवन की दृष्टि से और साहित्यिक दृष्टि से गुप्तकाल को इतिहास का स्वर्ण काल कहा गया।

P.T.O.

गुप्त साम्राज्य

① श्री गुप्त

② घटोत्कच गुप्त

दोनों पूर्ण स्वतंत्र शासक नहीं थे।

③ चन्द्रगुप्त प्रथम I
(गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक)
(गुप्त संवत: 319 ई. प्रारम्भ)

④ समुद्रगुप्त ← रामगुप्त
(उपाधि: पराक्रमांक, श्री विक्रम)
(उपनाम: भारत का नेपोलियन)

⑤ चन्द्रगुप्त द्वितीय
(उपाधि: विक्रमादित्य)
(गुप्तकाल का स्वर्णयुग)
(चीनी यात्री फाह्यान का आगमन)

⑥ कुमार गुप्त प्रथम
(उपाधि: महेन्द्रादित्य)
(नालंदा विश्वविद्यालय के संस्थापक)

⑦ स्कंदगुप्त
(उपाधि: क्रमादित्य) (हूणों का आक्रमण)
(गुप्त वंश का अंतिम शासक)

P.t.o.

Scanned with CamScanner

- गुप्तवंश की स्थापना श्रीगुप्त (275 - 300 ई.) ने की
- गुप्तवंश का दूसरा शासक महाराज घटोत्कच (300 - 20ई.) था।
- गुप्तवंश का प्रथम महत्त्वपूर्ण राजा चन्द्रगुप्त प्रथम (320 - 35 ई.) था।
- चन्द्रगुप्त ने नेपाल की लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया।
- चन्द्रगुप्त ने 319 - 320 ई. में गद्दी पर बैठा तथा गुप्त संवत् का आरम्भ किया।
- समुद्रगुप्त अपने को (लिच्छवी दौहित्र), कहकर गर्व का अनुभव करता है।

(1) श्रीगुप्त (240 - 280 ई)

→ प्रभावती के पति कि प्रभावती गुप्त के पूना स्थित ताम्रपत्र अभिलेख में श्री-गुप्त का उल्लेख गुप्त वंश के आदिराज के रूप में किया गया है। लेखों में इनका गोत्र धारण बताया गया है। इनका शासनकाल 240 से 280 ई. तक रहा।

→ श्री-गुप्त ने महाराज की उपाधि धारण की, इत्सिंग के अनुसार श्री-गुप्त ने मगध में एक मंदिर का निर्माण करवाया। तथा मंदिर के लिए 24 गांव दान में दिये।

→ इनके द्वारा धारण की गयी उपाधि - महाराज सामंतों द्वारा धारण की जाती थी, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि P.T.O.

श्रीगुप्त किसी शासक के अधीन करता था।

(2) घटोत्कच गुप्त — (280 - 319 ई)

→ लगभग 280 ई० में श्रीगुप्त ने घटोत्कच को अपना उत्तराधिकारी बनाया। इसने भी महाराज की उपाधि धारण की।

→ प्रभावती गुप्त के पूना एवं रिद्धपुर ताम्रपत्र अभिलेखों में घटोत्कच को गुप्त वंश का प्रथम राजा बताया गया है।

→ इसका राज्य लगभग: मगध के अगल-बगल तक सीमित था। उसने लगभग 319 ई. तक शासन किया।

(3) चन्द्रगुप्त I (319 - 335 ई.)

→ गुप्त वंश का प्रथम वास्तविक संस्थापक शासक था।
→ घटोत्कच के पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम ने गुप्त साम्राज्य की नींव डाली।
→ गुप्त साम्राज्य का प्रथम स्वतंत्र शासक जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
→ चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319-20 ई. में 'गुप्त संवत' की स्थापना की थी।
→ चन्द्रगुप्त प्रथम शासक था, जिसने सोने का सिक्का चलवाया।
→ चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया था।
→ चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(4) समुद्रगुप्त (335 - 380 ई.)

→ उपाधियाँ : पराक्रमांक, अप्रतिरथ, व्याघ्रपराक्रम

→ अभिलेखों में उसके लिए सर्वराजोच्छेत्ता विरुद प्रयुक्त हुआ है।

→ समुद्रगुप्त, गुप्त वंश का ~~अकबर~~ एक महान, योद्धा तथा कुशल सेनापति था। इसी कारण उसे 'विंसेंट स्मिथ' ने अपनी 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन (फ्रांसीसी शासक) कहा था। समुद्रगुप्त का साम्राज्य पूर्व में ब्रह्मपुत्र दक्षिण में नर्मदा तथा उत्तर में कश्मीर की तलहटी तक विस्तृत था।

→ समुद्रगुप्त की दक्षिणापथ विजय की 3 मुख्य नीतियाँ थी। 1. ग्रहण : शत्रु पर अधिकार, 2 मोक्ष :- शत्रु को मुक्त करना। 3 अनुग्रह — राज्य लौटाकर शत्रु पर दया करना।

(5) चन्द्रगुप्त - II — (380 - 412 ई)

→ उपाधियाँ — विक्रमांक। विक्रमादित्य, परमभागवत,)

→ चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य अपने चामोत्कर्ष की चरम पर था।

→ चन्द्रगुप्त द्वितीय के अन्य नाम — देवगुप्त, देवराज, देवश्री

→ चन्द्रगुप्त द्वितीय का साम्राज्य पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में बंगाल तक तथा उत्तर में हिमालय की तलहटी से दक्षिण में नर्मदा नदी

P ± 0.
M ± 0.

Scanned with CamScanner

तक विस्तृत था।

→ चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल साहित्य और कला का "स्वर्ण युग" कहा जाता है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के II के 9 रत्न थे →

रत्न	क्षेत्र	कृति / रचना
(1) क्षपणक →	ज्योतिष विद्या →	ज्योतिष शास्त्र
(2) धनवंतरी →	चिकित्सा →	आयुर्वेद (चिकित्सा की पुस्तक)
(3) कालिदास →	नाटक व काव्य →	अभिज्ञानशाकुंतलम्, मेघदूत
(4) अमर सिंह →	शब्दकोष रचना →	अमरकोश (शब्दावली)
(5) वराहमिहिर →	ज्योतिष विज्ञान →	वृहद संहिता
(6) वररुचि →	व्याकरण →	व्याकरण (संस्कृत)
(7) शंकु →	वास्तुकला →	शिल्पशास्त्र
(8) बेतालभट्ट →	जादू →	मंत्रशास्त्र
(9) हरिसेन →	कवि →	कविता

इसने रजत मुद्राओं का सर्वप्रथम प्रचलन करवाया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय II के दरबार में 9 रत्न थे।

- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के पश्चात उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम गुप्त शासक - (साम्राज्य का बना)
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में चीनी यात्री फाह्यान (399 - 412 ई) भारत यात्रा पर आया था।

Scanned with CamScanner

वैवाहिक सम्बंध -

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने वैवाहिक सम्बंधों और विजयों के द्वारा अपने साम्राज्य की सीमा बढ़ाई।

(1) नागवंश
(2) वाकाटक वंश
(3) कदम्ब राजवंश।

(1) नागवंश → यह राजवंश मथुरा, अहिच्छत्र, पद्मावती क्षेत्रों में स्थित था। विक्रमादित्य ने नाग राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया। उनसे एक कन्या प्रभावती गुप्त उत्पन्न हुई

(2) वाकाटक वंश → वाकाटक लोग आधुनिक महाराष्ट्र प्रांत में शासन करते थे। वाकाटकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन II द्वितीय के साथ कर दिया। वाकाटकों तथा गुप्तों की सम्मिलित शक्ति ने शकों का उन्मूलन कर दिया।

(3) कदम्ब वंश → कदम्बवंश के लोग कुंतल (कर्नाटक) में शासन करते थे। 'तालगुंड अभिलेख' से पता चलता है कि इस वंश के एक शासक 'काकुत्सवर्मन' ने अपनी एक पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त द्वितीय के पुत्र कुमारगुप्त से कर दिया।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(6) कुमारगुप्त —(415 – 454ई.)

→ उपाधियाँ — महेन्द्रादित्य

→ मुद्राओं पर अंकित उसकी उपाधियाँ — श्री महेन्द्र, महेन्द्रादित्य, महेन्द्र सिंह, अश्वमेध महेन्द्र आदि।

→ उसके स्वर्ण सिक्कों पर उसे गुप्तकुलामल चन्द्र एवं गुप्तकुल व्योमशशि कहा गया है।

→ शक्रादित्य को कुमारगुप्त की उपाधि, महेन्द्रादित्य का समानार्थी माना गया है।

→ कुमारगुप्त की मुद्राओं में गरुड़ के स्थान पर मयूर की आकृति अंकित की गई है।

→ कुमारगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किये तथा अश्वमेध प्रकार की मुद्राएँ चलाई।

→ कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

(7) स्कन्दगुप्त → (455 – 467ई.)

उपाधि — क्रमादित्य

→ स्कंदगुप्त गुप्त वंश का अंतिम प्रतापी शासक था।

→ हूणों का गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण स्कन्दगुप्त के शासनकाल की महत्वपूर्ण घटना थी। श्वेत हूणों को पूर्वी हूण भी कहा जाता है, जिन्होंने हिंदु कुश पार कर गांधार प्रदेश पर कब्जा कर गुप्त साम्राज्य का अभियान पूरा किया।

→ चक्रपालित ने सुदर्शन झील के तट पर विष्णु मूर्ति भी स्थापित करायी थी।

P.T.O.

गुप्त काल में सामाजिक विकास →

गुप्तकाल में सामाजिक जीवन ब्राह्मणवाद के पुनरुत्थान से बहुत अधिक प्रभावित हुआ था। इसलिए समाज में वर्ण व्यवस्था पर अत्यधिक ध्यान दिया गया। ब्राह्मणों को प्रभुत्व बनाए रखने के लिए साथ-साथ गुप्त राजाओं ने ब्राह्मणों को भूमि अनुदान में दी, जिससे उनकी शक्ति एवं प्रतिष्ठा में काफी वृद्धि हुई थी। ब्राह्मणों द्वारा राजाओं को दैवीय गुणों से युक्त बताकर कृतज्ञता व्यक्त की गई। इस काल की एक महत्वपूर्ण घटना जातियों का विभाजन था। पौराणिक चार जातियाँ विभिन्न उपजातियों में विभाजित हो गई। इसका मूल कारण उन लोगों को समाज में स्थान देना था, जिन्हें भारतीय समाज में आत्मसात कर लिया गया था। इनमें प्रमुख रूप से विदेशी (जैसे-हूण) थे, जिन्हें समाज में राजपूतों का दर्जा दिया गया था।

भूमि अनुदान की प्रक्रिया से पिछड़े लोग एवं कबिलाई लोग समाज में आने लगे। कबिलाई नेताओं को समाज में सम्मानजनक स्थान दिया गया, लेकिन अन्य कबिलाइयों को समाज में निम्न स्तर देना था, जिन्हें भारतीय समाज में आत्मसात कर लिया गया था। इनमें प्रमुख रूप से विदेशी - जैसे, P.T.O.

Scanned with CamScanner

हूण थे, जिन्हें समाज में राजपूतों का दर्जा दिया गया था।

भूमि अनुदान की प्रक्रिया से पिछड़े लोग एवं कबीलाई लोग समाज में आने लगे। कबीलाई नेताओं को समाज में सम्मानजनक स्तर दिया गया, लेकिन अन्य कबीलाइयों को समाज में निम्न स्तर ही प्रदान किया गया। चौथे वर्ण में शूद्रों को रखा गया था, तथापि अछूतों एवं शूद्रों में भेद था। चांडाल आदि अछूतों में रखे गये थे; इनकी छाया बहुत ही दूषनीय हुआ करती थी। नगर की सीमा से बाहर रहने पर तथा नगर में प्रवेश करते समय इनके द्वारा ढोल बजवाकर सूचना देने की व्यवस्था थी, जिससे कि उच्च वर्ण वाले सूचना प्राप्त होने पर इनसे स्वयं को बचा सके। स्त्रियों की दशा में इस काल में गिरावट आई। स्त्रियों को शिक्षा से पूर्ण रूप से वंचित कर दिया गया। बाल-विवाह का भी प्रचलन था। स्त्रियाँ मात्र घर के कार्य-कलापों तक ही सीमित थी। इनको स्त्रीधन के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की सम्पत्ति का कोई भी अधिकार नहीं दिया गया था। विवाह के समय इनको मिले हुए वस्त्र एवं आभूषणों को ही स्त्रीधन कहा जाता था, जिन पर इनका ही अधिकार होता था।

भारती कुमारी
14-04-2021